● **सुनो, समझो और लिखो :**

# १३. घड़ी ने खोला राज

*–नीलम राकेश*

**जन्म :** १९६२ बदायूँ(उ.प्र.) **रचनाएँ :** खुला आकाश, सुनो कहानी बचपन की, अनोखी छुट्‌टियाँ । **परिचय :** आप सुप्रसिद्‌ध साहित्यकार हैं । आपके लेखन में मानवीय संबंधों की अनूठी समझ दिखाई देती है ।

इस कहानी में एक मेहनती, ईमानदार एवं बहादुर लड़की की बहादुरी का वर्णन किया गया है ।

**✻ चित्र देखकर उचित अव्यय रिक्त स्थान पर लिखो तथा समझो । (की भाँति, और, की ओर, धीरे-धीरे, क्योंकि, बाप रे, शाबाश, अकस्मात )**

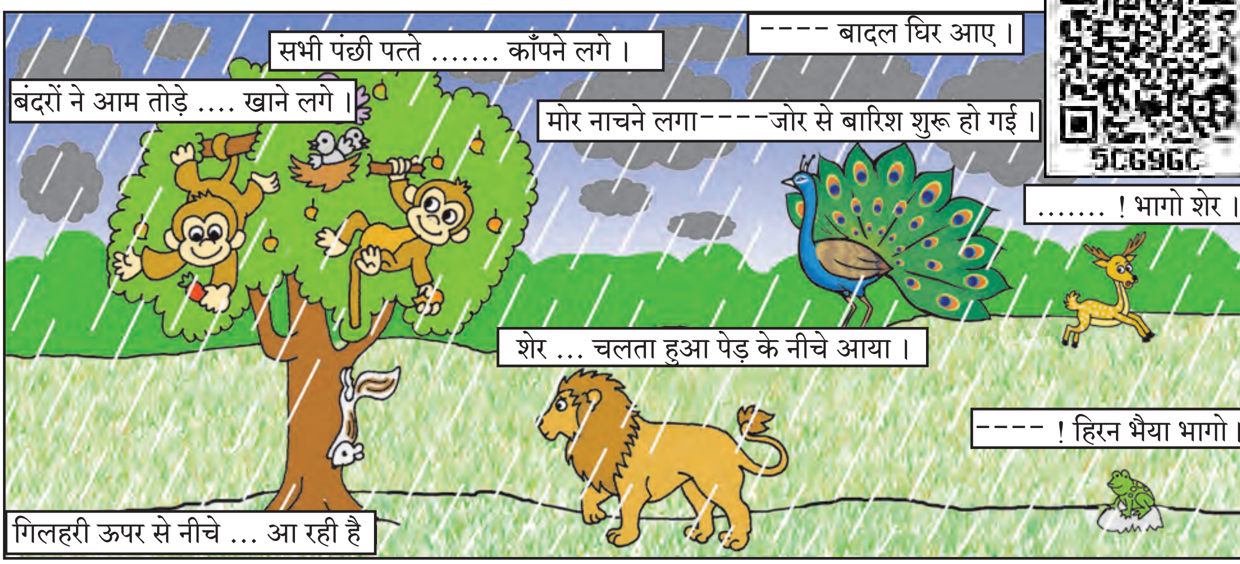


मीनल गोरखपुर जिले के एक गाँव में रहती थी । वह बहुत मेहनती लड़की थी । पढ़ने में उसका खूब मन लगता था । माँ के कामों में हाथ बँटाने के बाद वह नियम से विद्‌यालय जाती थी ।

रोज की तरह मीनल विद्‌यालय जाने के लिए घर से निकली। वह तेज चल रही थी क्योंकि आज उसे निकलने में देर हो गई थी । माँ की तबीयत खराब होने के कारण आज सारा काम उसे ही निपटाना पड़ा था । तिराहे पर आकर वह कुछ पल ठिठकी, उसके विद्‌यालय पहुँचने के दो रास्ते थे । एक पक्की सड़क वाला जिससे वह रोज जाती थी परंतु यह लंबा रास्ता था । दूसरा रास्ता छोटा था । उससे विद्‌यालय समय पर पहुँचा जा सकता था । यह एक पगडंडी थी जो जंगल से होकर जाती थी।

मीनल बहादुर लड़की थी । उसने जंगल से जाने का फैसला किया । वह आगे बढ़ गई । थोड़ी दूर जाने के बाद जंगल घना होने लगा । रह-रहकर जंगली जानवरों की आवाजें सुनाई देतीं । निडर मीनल सतर्कता से चारों ओर देखती हुई आगे बढ़ती जा रही थी। अचानक उसकी नजर किसी चमकती हुई चीज पर पड़ी । वह धीरे-धीरे उस ओर बढ़ी । पास पहुँचने पर उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, वह एक सुंदर, सुनहरी घड़ी थी ।

एक पल को मीनल के मन में यह विचार आया कि शायद यह घड़ी सोने की है । यदि यह उसे मिल जाए तो उसकी गरीबी दूर हो जाएगी । तुरंत ही उसे बड़ों की कही बात याद आ आई 'लालच बुरी बला है ।' जल्दी से मीनल चारों ओर देखने लगी कि शायद इस घड़ी का

❑ विद्‌यार्थियों से चित्र के आधार पर प्रश्न पूछें । वाक्यों की रचना के आधार पर अव्ययों के प्रकार (क्रियाविशेषण, संबंध सूचक, समुच्चय बोधक, विस्मयादि बोधक) उदाहरण सहित समझाएँ । कहानी से इस प्रकार के वाक्य ढूँढ़कर लिखवाएँ तथा दृढ़ीकरण होने तक अभ्यास करवाएँ ।

मालिक कहीं आस-पास दिख जाए । उस घने जंगल में उसे दूर-दूर तक कोई इनसान दिखाई नहीं दिया ।

मीनल ने घड़ी को अपने प्रधानाचार्य को देने का निर्णय लिया । वे शायद घड़ी को उसके असली मालिक तक पहुँचाने का कोई रास्ता ढूँढ़ लें । जिसकी इतनी महँगी घड़ी खोई होगी वह बेचारा कितना परेशान हो गया होगा । सोच कर ही मीनल दुखी हो गई ।

विद्‌यालय पहुँचते ही मीनल सीधे प्रधानाचार्य के पास गई और उन्हें पूरी बात बता कर घड़ी दे दी । प्रधानाचार्य उसकी ईमानदारी से प्रसन्न हुए और उसे लेकर पुलिस थाने चले गए । वह घड़ी देखते ही इंस्पेक्टर चौंक पड़ा ।

''अरे ! ...... यह घड़ी आपको कहाँ मिली ?''

''मुझे नहीं, इस बच्ची मीनल को यह घड़ी जंगल में मिली है । यह उसे उसके मालिक तक पहुँचाना चाहती है,'' प्रधानाचार्य ने स्नेह से मीनल के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा ।

''बेटा, क्या आप हमें उस जगह पहुँचा सकती हैं, जहाँ से आपको यह घड़ी मिली है ?''

''हाँ अंकल। ''

''क्या बात है इंस्पेक्टर साहब, आप कुछ परेशान लग रहे हैं ?'' प्रधानाचार्य अपनी जिज्ञासा दबा नहीं पाए ।

''मुझे लगता है यह घड़ी जानकीदास की है ।''

''वही सर्राफावाले जानकीदास ? उन्हें मैं जानता हूँ ।''

''हाँ वही । कल रात उनका अपहरण हो गया है।''

''क्या ...... ?'' प्रधानाचार्य की आँखें खुली रह गईं ।

''मुझे लगता है, इस घड़ी से हमें कुछ सुराग मिल जाएगा । मीनल बेटा, तुम मेरे साथ चलो । मैं जंगल में उस स्थान को देखना चाहता हूँ , जहाँ यह घड़ी मिली थी ।''

''इंस्पेक्टर साहब मैं भी आपके साथ चलूँगा । अपने विद्‌यालय की बच्ची को मैं अकेले खतरे में नहीं भेज सकता,'' प्रधानाचार्य जल्दी से बोले ।

''वैसे हम मीनल का पूरा ख्याल रखेंगे फिर भी आप चल सकते हैं ।''

पुलिस के सिपाहियों के साथ गाड़ी में बैठकर तीनों

❑ प्रश्नोत्तर के माध्यम से कहानी समझाते हुए आदर्श वाचन प्रस्तुत करें । विद्‌यार्थियों से क्रमश: वाचन कराएँ । विद्‌यार्थियों को उनका अपना साहसभरा कोई कार्य बताने के लिए कहें । उन्हें कहानी अपने शब्दों में बताने के लिए प्रेरित करें ।

जंगल पहुँच गए । पगडंडी के पास पहुँचकर जीप छोड़ दी । इंस्पेक्टर के निर्देश के अनुसार पगडंडी पर आगे-आगे मीनल, प्रधानाचार्य जी और सादे वस्त्र में इंस्पेक्टर चलने लगे । उनसे एक निश्चित दूरी बनाकर पेड़ों की ओट में पुलिस का दस्ता आगे बढ़ने लगा ।

''मीनल बेटा, तुम्हें जगह याद है? हम काफी घने जंगल में आ गए हैं ।'' इंस्पेक्टर ने पूछा ।

''हाँ अंकल, वहाँ दूर देखिए, उस बरगद के नीचे मुझे वह घड़ी मिली थी । वहीं से पगडंडी दाहिने मुड़ती है ।''

मीनल की बताई दिशा में सब सतर्क निगाहों से देखने लगे । धीरे-धीरे वे बरगद के नीचे पहुँच गए ।

''यहाँ तो कुछ भी नहीं है,'' प्रधानाचार्य महोदय बोले।

इशारे से उन्हें चुप कराते हुए इंस्पेक्टर ने पैरों के निशानों की ओर इशारा किया । अभी इंस्पेक्टर इधर-उधर देख ही रहे थे कि अचानक बरगद के ऊपर से दो व्यक्ति नीचे कूद पड़े ।

''कौन हो तुम लोग ? यहाँ जंगल में क्या कर रहे हो ?'' उनमें से एक कड़ककर बोला ।

''क.........क.........कुछ......... नहीं......... ह......... हम गाँव जा रहे हैं ।'' इंस्पेक्टर ने डरने का अभिनय किया ।

''यह बच्ची कौन है ?'' वह फिर गरजा ।

''य.........यह.........म.........मेरी भतीजी है,'' कहते हुए इंस्पेक्टर ने मीनल को अपने पास कर लिया । ऐसा करते हुए उसे अपनी सीटी पकड़ा दी ।

''इन्हें भी वहीं ले चलो,'' काले आदमी ने आदेश दिया ।

इंस्पेक्टर ने प्रधानाचार्य एवं मीनल को विरोध न करने का इशारा किया । प्रधानाचार्य व इंस्पेक्टर रूमाल से बाँध दिए गए थे । इनके पीछे-पीछे पास आकर वे बोले, ''यहीं रुक जाओ ।''

दोनों ने मिलकर उस घनी झाड़ी को हटा दिया । देखते-ही-देखते वहाँ एक बड़ी-सी गुफा दिखाई देने लगी । गुफा के अंदर एक व्यक्ति को हाथ-पैर बाँध कर एक कोने में बिठा रखा था । बाहर की ओर उसकी पीठ थी । उसके पास दो अन्य व्यक्ति बैठ हुए थे । उन लोगों को देखते ही उनका मुखिया गरजा-

''इन लोगों को यहाँ क्यों लाए हो ?''

''बॉस, ये लोग बरगद के नीचे कुछ ढूँढ़ रहे थे ।''

बॉस की त्योरियाँ चढ़ गईं । इसी समय इंस्पेक्टर ने

मीनल को इशारा कर दिया । वह जोर-जोर से सीटी बजाने लगी । बॉस ने चील की तरह झपट कर उससे सीटी छीन ली और जोर से चीखा

''यह क्या हरकत है ? सीटी क्यों बजा रही हो ?''

मीनल बुरी तरह डर गई। इंस्पेक्टर ने बात सँभाली, ''बच्ची है साहब, डर गई । उसके मुँह में सीटी थी घबराहट में बजने लगी । अब नहीं बजाएगी ।''

बॉस ने घूरकर इंस्पेक्टर को देखा फिर अपने आदमियों से बोला, ''बाँध दो इन्हें भी यहीं ।''

छीने जाने से पहले सीटी अपना काम कर चुकी थी। सीटी का संकेत पाते ही पुलिस के दस्ते ने चारों ओर से गुफा को घेर कर धावा बोला । अचानक हुए आक्रमण से अपहरणकर्ता घबरा गए । उन्हें भागने का मार्ग भी नहीं मिला । वे चारों रंगे हाथों पकड़े गए । सेठ जानकीदास को मुक्त करा लिया गया । इस सफलता का सेहरा मीनल के सिर बँधा ।

अगले दिन हर तरफ मीनल की ईमानदारी और हिम्मत की चर्चा हो रही थी। विद्यालय की ओर से उसे एक साइकिल पुरस्कार स्वरूप दी गई। पुलिस अधीक्षक द्वारा भी वह सम्मानित की गई । सेठ जानकीदास तो इतने अभिभूत थे कि उनके मुँह से शब्द ही नहीं फूट रहे थे । अब मीनल उनके लिए अपनी बेटी के समान थी । इन सबसे अलग मीनल प्रसन्न थी कि वह समाज के लिए कुछ कर सकी ।

## मैंने समझा

------------------------------------------------------------------------

------------------------------------------------------------------------

## शब्द वाटिका

**नए शब्द**

तिराहा = जहाँ तीन रास्ते मिलते हैं ।

पगडंडी = पैदल चलने का कच्चा रास्ता

सतर्कता = सजगता

दस्ता = दल

मुखिया = गाँव का प्रमुख

अभिभूत = प्रभावित

**मुहावरे**

हाथ बँटाना = सहायता करना

धावा बोलना = हमला करना

सफलता का सेहरा बँधना = श्रेय मिलना

## स्वयं अध्ययन

अपनी पढ़ाई का नियोजन करते हुए दिनचर्या लिखो ।

## सदैव ध्यान में रखो

हमें सदैव जागरूक रहना चाहिए ।

## खोजबीन

आकाशवाणी केंद्र से उद्घोषक की घोषणा हम कैसे सुन सकते हैं, लिखो ।

## सुनो तो जरा .....

जल चेतना से संबंधित विज्ञापन सुनो और सुनाओ ।

## बताओ तो सही

'पानी' को अन्य प्रादेशिक भाषाओं में किन-किन नामों से जाना जाता है ?

## वाचन जगत से

धर्मवीर भारती की जीवनी पढ़ो ।

## मेरी कलम से

'ईमानदारी' से संबंधित कोई एक घटना लिखो, जो तुमने देखी है ।

## * प्रस्तुत कहानी का घटनाक्रम लिखो । (मुद्दों में)

## जरा सोचो तो .... लिखो ।

यदि देश के सभी पुलिस एक दिन छुट्टी पर चले जाएँ तो...

## अध्ययन कौशल

राष्ट्रीय एकात्मता सूचित करने वाला एक 'भित्ति चित्र' बनाओ ।

## भाषा की ओर

उचित मुहावरे/कहावतों को चुनकर वाक्य के रिक्त स्थान पूर्ण करो ।

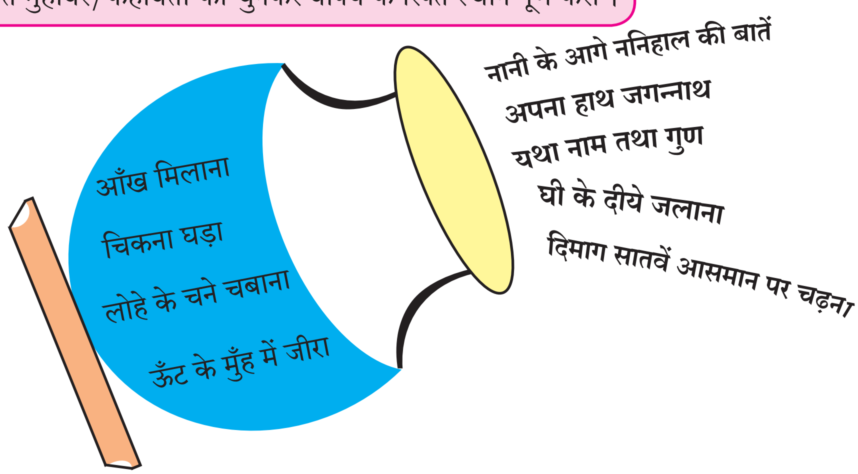


१) अपनी कलई खुल जाने के बाद रमेश मुझसे ................................का साहस नहीं रखता ।

२) प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होते ही रमेश का ................................ ।

३) अपने से अधिक विद्‌वान को जानकारी देना अर्थात ................................ ।

४) वह .................................. है उसपर आपकी बात का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा ।

५) आदर्श जैसा नाम वैसा ही आचरण अर्थात ................................ ।

६) दो रोटियाँ तो श्याम के लिए ................................ के समान है ।

७) किसी भी कार्य के लिए दूसरों पर आश्रित मत रहो, अपना काम स्वयं करो अर्थात .............................. ।

८) सुबह उठकर व्यायाम करना सुरेश के लिए अंत्यत कठिन कार्य है जैसे ................................ ।

९) अपने पोते का व्यापार अच्छा चलने पर दादी ने ................................ ।